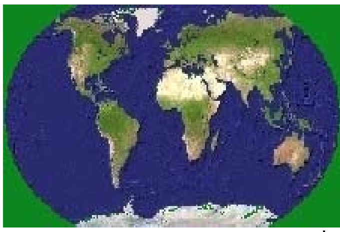

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 6, 630-632
June 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

कल्पना
शोधार्थी, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

‘राग दरबारी’ उपन्यास में स्वातंत्र्योत्तर भारत

कल्पना

शोध-सार

श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास ‘राग दरबारी’ अपने प्रकाशन के सातवें दशक में सर्वाधिक चर्चा का विषय रहा है | इस उपन्यास में लेखक ने कटाक्ष व्यंग्य करते हुए स्वातंत्र्योत्तर भारत की स्थति का चित्रण किया है | इसमें दिखाया है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनतांत्रिक व्यवस्था की विफलताओं ने हमारे जीवन मूल्यों, आस्थाओं, विश्वासों, आदर्शों, एवं सांस्कृतिक परम्पराओं की नींव को हिलाकर रख दिया है | सरकारी योजनाएं भ्रष्टाचार के कारण नेताओं की जेब मात्र भर रही हैं | आजादी के बाद के समाज और जीवन व्यापी विसंगतियों के सत्य की कुरूपता को चिन्हित करने के लिए लेखक ने इस कृति में ‘शिवपालगंज’ नामक कस्बे को केंद्र में रखकर हमारी समकालीन सच्चाई को प्रभावी एवं सटीक ढंग से चित्रित किया है | चुनाव प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए बताया है कि किस तरह भाई भतीजावाद चलाते हुए सत्ता लगातार कुछ लोगों के बिच में ही बनी रहती है | भारतीय शिक्षा व्यवस्था का भी नंगा नाच दिखाया है | कि कहने के लिए तो स्कूल कॉलेज खोले गए है परन्तु वो सिर्फ नाम के ही शिक्षा संस्थान है | उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए पात्र ‘रंगनाथ’ के माध्यम से बताया है कि वह स्थितिओं को समझते हुए भी उनमें कुछ भी सुधार नहीं करना चाहता है |

मुख्य शब्द:- राग दरबारी, सामजिक व्यवस्था, व्यंग्य, स्वातंत्र्योत्तर भारत, भ्रष्टाचार, चुनाव प्रणाली, राजनीति, संस्थान

मुख्य शोध-पत्र:-

रागदरबारी’ उपन्यास का प्रकाशन सन् 1968 ई. में हुआ | यह प्रतीकात्मक और ग्रामीण परिवेश का यथार्थवादी उपन्यास है | इसके माध्यम से श्रीलाल शुक्ल ख्याति के शिखर तक पहुचें है | जिसके चलते 1970 ई. में इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है | इसकी कथावस्तु के केंद्र में ‘शिवपालगंज’ नामक एक छोटे से कस्बे को रखा गया है जो उस गाँव तक ही सीमित है, परन्तु इसकी अंतर्वस्तु देशव्यापी है | उपन्यास के केन्द्रिय चरित्र वैधजी है | वे बद्री पहलवान और रुप्पन के पिता हैं और रंगनाथ के मामा है पेशे से वेध होने के साथ-साथ वे छंगामल इंटर कॉलेज के मैनेजर, कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डॉयरेक्टर और अपने दरबारी सनीचर की आड़ में ग्रामसभा के भी प्रधान है | इस प्रकार वे उस राजनितिक संस्कृति के साक्षात प्रतिक है जो प्रजातंत्र और लोकहित के नाम पर हमारे चारों ओर फल-फूल रही है | वस्तुतः इस उपन्यास में प्रितिकात्मक रूप में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में व्याप्त अराजकता, भाई-भतीजावाद, अवसरवादिता, लूट खसोट, भ्रष्टाचार, चुनावी जुम्लें, प्रशासनिक एवं न्यायिक विद्रूप को अत्यन्त कोशल के साथ उजागर किया गया है | “आज के भारतीय जीवन के इस पक्ष की (पतानोंमुखता, गिरावट, विकृति, मूल्यहीनता) बहुत सी विभिन्न स्थितियों के बड़े प्रभावी चित्र ‘राग दरबारी’ में हैं जो हमारे अनुभव को फिर से ताजा करते हैं |”[1]
हैं |” ‘रागदरबारी’ कोई राजनितिक उपन्यास नहीं है | इसमें किसी भी महत्वपूर्ण राजनितिक घटनाओं का कहीं भी, किसी भी रूप में प्रत्यक्ष रूप से कथा का आधार नहीं बनाया गया है | लेकिन उपन्यास में घटित घटनाओं, पात्रों के मनोभावों, उनकी चारित्रिक विशेषताओं की पुष्टि के लिए कतिपय राजनितिक तथ्यों का संकेत इस प्रकार हुआ है कि तत्कालीन राजनीति पर श्रीलाल शुक्ल का कटाक्ष उजागर हो जाता है | इसमें दिखाया है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनतांत्रिक व्यवस्था की विफलताओं ने हमारे जीवन मूल्यों, आस्थाओं, विश्वासों, आदर्शों, एवं सांस्कृतिक परम्पराओं की नींव को हिलाकर रख दिया है | सरकारी योजनाएं भ्रष्टाचार के कारण नेताओं की जेब मात्र भर रही हैं | जनतंत्र की दुहाई के नाम पर जनतंत्रीय-मूल्यों का गला घोंटा जा रहा है | नेता, समाज-सेवक और सरकारी नौकर आपस में मिलकर सेवा के नाम पर देश और जनता दोंनो को लूट रहें हैं | इसके ‘रागदरबारी’ नामक शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है की यह राजनीति परख या व्यवस्था को दर्शाने वाला उपन्यास है | आजादी के बाद सामन्ती व्यवस्था खत्म तो हुई किन्तु हमारी पारम्परिक सामन्ती प्रवृति का अंत नहीं हुआ | पहले वह राजा-महाराजाओं, मनसबदारों और सामंतों में थी, अब मंत्रियों, नेताओं और हाकिम-हुक्कामों में फल-फुल रही है | गाँवों की नारकीय जिन्दगी में कोई खास सुधार नहीं हुआ है | बल्कि सत्ता में आए स्वार्थ-परक लोगों के कारण अमानवीय विघटनशील और अवांछनीय तत्वों के बढते प्रभाव के सामने आदर्श, सिद्धांत, नैतिकता और जीवनगत मूल्य खोखले एवं अर्थहीन नजर आने लगे है | आजादी के लिए लगातार संघर्ष करते हुए भारतवासियों ने अपने स्वतंत्र भारत के लिए अनेक सपने सजाएं हुए थे परन्तु जब सत्ता में आये स्वार्थी लोग अपनी मनमानी करने लगे तो लोगों के सपने उनकी आखों के सामने चकनाचूर होते हुए नजर आने लगे जिसके चलते मोहभंग होने लगा और लोगों का विश्वास टूटने लगा था | यह मोहभंग अन्य साहित्यकारों अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धूमिल, आदि की रचनाओं में भी दिखाई देता है |

Correspondence
कल्पना
शोधार्थी, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

[1] साप्ताहिक हिदुस्तान : नेमीचन्द्र जैन

चुनावी प्रणाली - इसके अन्तर्गत देश की जनतांत्रिक प्रणाली पर एक गहरा कटाक्ष हुआ है | भारतीय राजनीति के कर्णधारों की गुटनिरपेक्षता और तटस्थता की नीति पर भी उपन्यासकार ने इसी पध्दति से कटाक्ष किया है | चुनाव करवाएं तो जाते है परन्तु उसके कार्यकर्ताओं के रूप में वे ही उपस्थित होते हैं जिसके कारण परिणाम वही आते जो उनकी इच्छा के अनुसार होते है | "छाटे ने निष्ठापूर्वक गोपनीयता की शपत ली | पर वह शपत गोपनीयता की उन सभी शापतों जैसी थी जो राजभवनों में ली जाति हैं |"[2] यहाँ राजभवनों में आयोजित शपत समारोह की वास्तविकता पर गहरा कटाक्ष किया है | उपयुक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि 'रागदरबारी' की मूल कथा से अलग रहकर भी इसमें स्वातन्त्र्योत्तर राजनीति के यथार्थ को अत्यंत कलात्मक ढंग से उजागर किया है | आधुनिकता के संदर्भ में इस उपन्यास की रचना-भूमि प्रयोगधर्मिता की सूचक भी है | क्योकि यहाँ वस्तु शिल्प के पंजे अनायास हर कहीं फैल गये है और उपन्यास का कथ्य केवल व्यंग्य और विद्रूप की शक्लों में उभरता है | यही कारण है कि वस्तु में से कथा भाव लुप्त होता गया है जो इस उपन्यास की अपेक्षा भी है | ग्रामीण जीवन के नए यथार्थ को अंकित करने वाले उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' और 'आँधा गाँव' की ही तरह 'रागदरबारी' का महत्व भी आज के हिंदी उपन्यास को एक विशिष्ट ध्रुव की और ले जाने की प्रक्रिया की अभिव्यंजक है | शिवसागर मिश्र के शब्दों में – "ये वे कृतिया हैं, जिनमें आंचलिक रूप रंगों की तुलना में वास्तविकता से ठोस धरातल अधिक प्रगल्भ होकर उभरे हैं, जिनमें आज के ग्रामीण जीवन को उसके समुचे संक्रान्तिपूर्ण परिवेश एवं स्थितियों की टकराहट के बिच से उभरती एक नए किस्म की जिन्दगी और उसे जीने तथा महज झेलने वाले व्यक्ति चित्रित किये गये है |[3] इस उपन्यास की पृष्ठ भूमि एक गाँव की जिन्दगी को केंद्र में लेकर संवारी गयी है | यह गाँव शहर से काफी नजदीक है और उस सड़क से जुड़ा हुआ है जो शहर की तरफ जाती है | यहाँ गाँव के शहरीकरण की प्रक्रिया का बोध तो है, लेकिन शिवपालगंज शहर की संवेदना नहीं जगाता, इसका ग्रामीण यथार्थ शहर की संवेदना नहीं जगने देता है | इसका ग्रामीण यथार्थ शहर के नजदीक रहते हुए भी बराबर बना रहता है | शहर और गाँव का यह नजदीकी बोध आधुनिकता की नीवें संश्लिष्ट करता है, क्योकि आधुनिकता के संदर्भ में ग्राम और शहर दोनों के सश्लिष्ट यथार्थ के आयाम जुटाते हैं | जिस रूप में शिवपालगंज के आंतरिक तंत्र के चेहरे को उपन्यास में उभारा गया है, वह गांव की सामजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भूमिका को बहुत हद तक प्रतीकात्मक भंगिमा प्रदान करता है और यह भंगिमा प्रकारांतर से देश के समुचे व्यवस्था तंत्र की पर्याय बन जाती है | राग दरबारी इस संदर्भ में किसी तरह के चिकने-चुपड़े भावात्मक कथ्य को लेकर नहीं चलता बल्कि गांव के विघटन और इस विघटन के यथार्थ को प्रमाणिक रूप में अंकित करता है | यह अंकन एक नई शैली में हुआ है | जो कई बार हेनरी मिनर की सी लगती हैं | "रागदरबारी' ग्रामीण यथार्थ की क्रूरता को बहुत निर्मम भाव से उजागर कर सका है |" [4]

पंचायत व्यवस्था - स्वाधीनता के बाद भारतीय गावों के समुचित विकास के लिए विकास खण्डों के साथ ही सहकारी समितियों, ग्रामसभाओं, न्याय-पंचायतों आदि की भी व्यवस्था हुई है | इन्हें समुचित रूप से चलाने के लिए बि.डी.ओ., ए.डी.ओ., बहुत सारे इंसपेक्टरों, ग्राम सेवकों, पंचायतों, मंत्रियों आदि कर्मचारियों का जाल बिछाया गया है | शिवपालगंज की चमरोही और आम लोगों की खस्ता हालत को देखते हुए जमीदारी उन्मूलन की बात हास्यास्पद प्रतीत होती है | "आज हिंदुस्तान की राजनीति से इस दौर में चले विकास कार्यो से सरकार और उसकी नौकरशाही से तथा दुसरे ओजारों की गतिविधियों से इस दरमियाँ किस तरह की औलादे पैदा हुई है*;* उनका व्यक्तित्व–शास्त्र, नीति-शास्त्र, समाजशास्त्र, नया है – यही रागदरबारी की वस्तु है |" [5] 'रागदरबारी' एक अत्यन्त प्रखर व्यंग्यात्मक उपन्यास है | उपन्यासकार ने समाज के सम्बन्ध में अपनी मानसिक प्रतिक्रियाओं को कारगर अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए व्यंग्य-शैली का सहारा लिया है | व्यंग्य का अभिप्राय हास्य, मजाक या गाली नहीं है | इसके माध्यम से समाज में व्याप्त सामजिक-राजनीतिक बुराइयों का वर्णन किया है | यह एक यथार्थवादी रचना है जो सार्वदेशिक भ्रष्ट व्यवस्था को रेखांकित करती है | यह नयी व्यवस्था क्या होगी, इसका सूत्रपात कौन और कैसे करेगा इसे पाठक सामाजिक सरोकार पर छोड़ दिया गया है | श्रीलाल शुक्ल ने 'रागदरबारी' उपन्यास में गांव की कथा के बहाने स्वातन्त्र्योत्तर भारत की बुर्जुआ लोकतंत्र को नंगा किया है | इसमें गाँव की कथा के माध्यम से स्वतंत्र भारत की मूल्यहीनता को बड़ी ही सहजता और निर्ममता से दिखाया गया है इसमें लेखक ने शुरु से अंत तक कटाक्ष व्यंग्य करते हुए अपनी बात कही है | जो इसके पाठको में व्यवस्था के प्रति क्रोध उत्पन्न करते है |

आजादी के बीस वर्ष बाद 'रागदरबारी' उपन्यास का आगमन वास्तव में हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम में सबसे अधिक चौकने वाली घटना है | इसमें उपन्यासकार ने देश की समूची स्थिति-परिस्थिति पर विचार करते हुए उसका मार्मिक चित्रण किया है - स्वतंत्रता, जनतंत्र, बहुमुखी विकास, सहकारिता, पंचायत-व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने वाले समाज के दुष्ट और निहित स्वार्थी चरित्र वाले तत्वों को बेनकाब करते हुए लेखक ने उनपर आक्रमण किया है | प्रशासन पर व्यंग्य करते हुए लेखक कहता है – "ड्राइवर साहब, तुम्हारा गियर तो बिल्कुल अपने देश की हुकुमत – जैसा है |"[6] वैधजी इस कृति के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र हैं | इनकी पहुंच बहुत व्यापक और हाथ लम्बे हैं | परिवेश की विकृतियों को उभारने में रचनाकार ने वैधजी के व्यक्तित्व और उनकी मानसिकता को गहराई एवं विस्तार से उठाया है | "वैध जी है और रहेंगे |" (पृष्ठ – 42) शिवपालगंज के केंद्र में वैध जी और उनकी कोठी सामन्ती परम्परा के प्रतिक हैं | वैध जी की सांठ-गाँठ अफसरों से भी हैं | देश सेवा के नाम पर सत्ता की राजनीति उनका पेशा बन गया है | "देखो, यह तो पालिटिकल है | इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है | यह तो कुछ भी किया जा सकता है | पिताजी जिस रास्ते में है उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है | मन को जैसे भी हो, चित्त करना चाहिए | यह न चित्त कर पायेंगे तो खुद चित्त जायंगे और फिर बैठे चूरण की पुडिया बाँधा करेंगे और कोई तक को भी नहीं मिलेगा |"[7]

इसकी पाठ-प्रक्रिया से गुजरते हुए कृति के जिस विशिष्ट तत्व की ओर हमारा अनायास और सहसा ध्यान जाता है – वह निरालापन रचना की बनावट एवं बुनावट में तराशा गया उसकी टेकनीक का व्यंग्यात्मक एप्रोच है | जिसका एक कारण यह भी है कि उपन्यास के क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले श्रीलाल शुक्ल एक व्यंग्यकार के रूप में हिंदी साहित्य में अपना पाँव जमा चुके थे | इस उपन्यास में भारतीय शिक्षा व्यवस्था की पोल खोलकर रख दी है | विद्धालय के अध्यापकों को पढ़ाने-लिखाने के काम से कोई सरोकार नहीं है | अध्यापक भी उसी की चाकरी में लगे रहते हैं जिसके हाथ में सत्ता है | छात्रों की हालत बड़ी ही दयनीय है | परीक्षा पास करने के लिए कुंजियाँ है और वहाँ नकल करने की छूट है | अध्यापक भी मदद कर देते हैं | फिर भी पास होने न होने से उन्हें ज्यादा मतलब ही नहीं है | शिवपालगंज की यह शिक्षा व्यवस्था पूरे देश की संस्थाओं की नियति और कार्य पद्धति का चित्र खिचती है | उच्च शिक्षा को भी मजाक बना दिया है –"कहा तो, घास खोद रहा हूँ | इसी को अंग्रेजी में रिसर्च कहते हैं | परमल एम. ऐ. किया था | इस साल से रिसर्च शुरू की है |"[8] लेखक ने रंगनाथ के माध्यम से बताया है की वह कहने को तो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है परन्तु उसका कोई भी कृत उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए मनुष्य जैसा नहीं है | वह सेहत बनाने के लिए अपने मामा वैध जी के घर रहने आता है और उनके द्वारा किए जाने वाले शोषण पर आधारित कार्यो में लिप्त हो जाता है | वह कही पर भी अपनी प्राप्त की हुई शिक्षा का इस्तेमाल नहीं करता है | जिससे स्पष्ट हो जाता है की वह शिक्षा निर्थक है | " वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता हैं |"*(*राग दरबारी*)* इस उपन्यास को पढने से ज्ञात होता है की स्वतंत्र भारत में सरकारी नोकरियों के लिए जो नियुक्तियां हुई थी वो भी भाई-भतीजावाद के आधार पर ही हुई थी | इनके चयन हेतु शिक्षा या योग्यता को आधार नहीं बनाया गया था | जिसके कारण वे लगातार देश के विकास में अवरोध पैदा करते रहें हैं | दफ्तरों की स्थति भी बहुत ही निम्न स्थर की है, वहाँ पर प्राथमिक आवश्यकताओं की वस्तुओं की भी उपलब्धता नहीं हैं | इनके लिए आए हुए पैसों पर अफसर अपना अधिकार समझते हैं | "यहाँ बैठकर कोई चारों ओर निगाह दौड़ता

[2] रागदरबारी : श्रीलाल शुक्ल

[3] कल्पना : नवलेखन, अंक – 1,पृष्ठ संख्या : 51-52

[4] आज का हिन्दी साहित्य : संवेदना और दृष्टि - रामदरश मिश्र पृष्ट संख्या - 115

[5] आलोचना : त्रैमासिक पत्रिका – कमलेश का लेख

[6] राग दरबारी : श्रीलाल शुक्ल

[7] वही .... पृष्ठ संख्या - 190

[8] वही .... पृष्ट संख्या - 7

तो उसे मालुम होता, वह इतिहास के किसी कोने में खड़ा है | अभी इस थाने के लिए फाउन्टेन पेन नहीं बना था, उस दिशा में कुल इतनी तरक्की हुई थी की कलम सरकंडे का नहीं था | यहाँ के लिए अभी टेलीफोन की ईजाद नहीं हुई थी | हथिहारों में कुछ प्राचीन रायफलें थी जो, लगता था, गदर के दिनों में इस्तेमाल हुई होगी | वैसे, सिपाहियों के साधारण प्रयोग के लिए बाँस की लाठी थी, जिसके बारे में एक कवि ने बताया है कि वह नदी-नालेपार करने में और झपटकर कुत्ते को मारने में उपयोगी साबित होती है | यहाँ के लिए अभी जीप का अस्तित्व नहीं था | उसका काम करने के लिए दो-तीन चौकीदारों के प्यार की छाँव में पलने वाली घोड़ा नाम की एक सवारी थी जो शेरशाह के ज़माने में भी हुआ करती थी |”[9] स्वतंत्रता के बाद जो लोग सत्ता में आए उन्होंने अपने आराम की वस्तुओं का संग्रह करना शुरू कर दिया था | उनको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था कि जिन लोगों ने संघर्ष किया है उनकी प्राथमिक जरूरत भी पूरी हो रही है या नहीं | ऐसे पुलिस थाने की कल्पना जिसमें पेन ही नहीं है तो वह प्राथमिक सूचना क्या खाक लिखेगा, लोगों के घरों में टेलीफोन आ चूका था परन्तु पुलिस थाने में नहीं था | जिसके चलते सूचनाएं ही समय से प्राप्त नहीं हो सकती हैं | “ऐसा नहीं हो सकता | मेरे सिपाही लिखना नहीं जानते | एकाध हैं जो दस्तखत-भर करते हैं”[10]

लोकतंत्र को झूठतंत्र ही नहीं लूटतंत्र में परिवर्तित करने वाले तत्वों के काले कारनामों को दिखाने के लिए ‘शिवपालगंज’ को चुना गया है | वस्तुतः ‘रागदरबारी’ में शिवपालगंज और वैधजी ऐसे सशक्त प्रतिक है, जो पंचायत व्यवस्था, काँलेज प्रबंधन, कोपरेटिव यूनियन का प्रबंधन, थाना, पुलिस व्यवस्था ही नहीं न्याय व्यवस्था को भी अपनी मुठ्टी में बंद किय हुए है | ‘रागदरबारी’ के लेखक ने शिपालगंज नाम के जिस गाँव से हमारा परिचय करवाया है वह सिर्फ एक स्थान नहीं है बल्कि पूरा का पूरा एक समय है जिसमें भारतीय समाज साँस ले रहा है और घूट रहा है, यह भ्रष्ट राजनीति संसद और विधानसभाओं से लेकर गांवों की पंचायतों, शिक्षण संस्थाओं तक भी फैल गया है | इस पर चादर बिछा रखी है ताकी दूर से देखने में ये साफ नजर आ सके | इस उपन्यास में सीधे-सीधे उस समाज को दिखाने की कोशिश की है जिसे हम अपनी आजादी के बाद का परिवर्तित समाज कहते है | यह कृति अपने सीमित परिवेश में इस सामजिक सत्य को उजागर करने में जुटी है कि स्वतंत्रता के बाद आज तक इस जनतंत्रीय व्यवस्था में भी हमने अपनी उस पारम्परिक प्रवृत्ति को विरासत के रूप में ग्रहण नहीं किया है, बल्कि उसमें काफी इजाफा भी किया है – सामंती युग में वह दरबारों तक सीमित थी, आज सत्ता के विकेन्द्रीयकरण के नाम पर, जहाँ कहीं भी सत्ता और शक्ति का केंद्र है, वहाँ यह राग अपने बदले तेंवर में लगातार अलापा जा रहा है |

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. राग दरबारी: श्रीलाल शुक्ल
   प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, पेपरबैक
   संस्करण: दसवाँ संस्करण – 1991, चौथी आवृति: 2010
2. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास
3. आधुनिक हिन्दी उपन्यासकार: सं. भीष्म साहनी, डाँ.रामजी मिश्र, भगवती प्रसाद निदारिया
4. उपन्यास: स्थिति और गति – डाँ, चद्रकांत म. बांदिवडेकर
5. औपन्यासिक समीक्षा एवं समीक्षाएँ: डाँ. आदित्य प्रसाद त्रिपाठी
6. साप्ताहिक हिंदुस्तान: नेमीचन्द्र जैन
7. आज का हिन्दी साहित्य: संवेदना और दृष्टि – रामदरश मिश्र
8. आलोचना: त्रैमासिक – कमलेश का लेख
9. रागदरबारी: व्यंग्य-कला की बेजोड़ कृति – गुडिया कुमारी, सहचर ... त्रैमासिक ई-पत्रिका, साहित्य, सिनेमा, कला, एवं अनुवाद की शोध ई- पत्रिका जुलाई – 2015
10. कल्पना: नवलेखन, अंक – 1

[9] राग दरबारी : श्रीलाल शुक्ल, पृष्ट संख्या – 11

[10] वही ....पृष्ट संख्या - 13